RNI NO. : MPHIN33094

जनवरी से मार्च 2025

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 17 वां

अंक : 67 वां

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

वत्थु सहावो धम्मो

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

साबधान

ऐसा होता है पत्ता गोभी का खतरनाक कीड़ा

नीचे दी फोटो को ध्यान से देखिये ।
पत्ता गोभी में पाया जाने वाला
कीड़ा कितना खतरनाक होता है ।

पत्ता गोभी खाने से
पहले जान ले
ये बात

पत्ता गोभी कच्ची खाने, अच्छी तरह से न धोने,
प्रॉपर तरीके से न उबालने
से ये कीड़ा पेट में चला जाता है ।

ये कीड़ा पत्ता गोभी की परतों के बीच में छिपा होता है और आमतौर पर नजर नहीं आता है ।

पेट में ये कीड़ा आंतों से चिपक जाता है और वहां पर अंडे देता है।

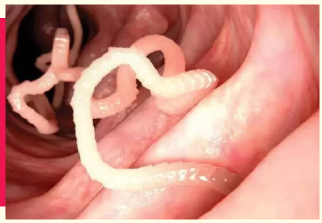

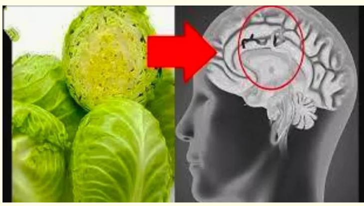

इन अंडों से निकले लार्वा ब्लड के जरिये हमारे शरीर के दूसरे हिस्सों और ब्रेन में भी पहुंच जाते है ।

और अनेक बीमारियाँ पैदा करते हैं । जो कि प्राणघातक हो सकती है । जिनागम के चरणानुयोग ग्रन्थों के अनुसार पत्ता गोभी अभक्ष्य है । इसलिये गोभी का पूर्णतः त्याग करना चाहिये ।

चहकती चेतना

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक

- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन – डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका
- श्रीमति कोमल–नीरज जैन, नीरू केमिकल्स, दिल्ली

संरक्षक

- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/
  श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :

- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता

1	सूची	1
2	संपादकीय	2-3
3	हमारे तीर्थ क्षेत्र- तिरूमलै	4
4	पांचों पांडवों का वैराग्य/सोच	5-6
5	अमर जैन शहीद – लाल हुकमचंद जैन	7
6	हमारे मुनिराज	8
7	सेठ लक्ष्मीचंद	9
8	मस्जिदों में जैन मंदिर	10-11
9	ऐतिहासिक महापुरुष – पं.प्रभुदास/राय बद्रीदास	12
10	सोच (पुत्र का पिता के नाम)	13-14
11	जूठा भोजन	14
12	प्रेरक प्रसंग – उत्तम कार्य	15
13	कैलेण्डर	16-17
14	जय जिनेन्द्र का इतिहास	18
15	अब नहीं पहनाऊँगी	19-20
16	शरीर और आत्मा का वार्तालाप	21
17	भारतीय इतिहास की श्रेष्ठ नारी-मन्दोदरी	22-23
18	जैन धर्म का इतिहास – कलचुरी नरेश...	24
19	भारतीय संस्कृति के विश्वदूत-श्री वीरचंद.....	25-26
20	प्रेरक प्रसंग – गर्व किस पर / विशाल हृदय	27
21	समाचार	28
22	मायाचार का दुष्परिणाम	29
23	करनी का फल	30
24	प्यारी कवितायें – शांत बंदर / पर्वत और पहाड़	31
25	जन्मदिन	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

मुद्रण व्यवस्था : स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क -500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700
PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं।

संपादकीय

वेलेन्टाइन डे की फूहड़ता और अनैतिक होते युवा

प्रतिवर्ष 14 फरवरी को मनाया जाने वाला प्रेम पर्व वेलेन्टाईन डे अनैतिकता, कुशील और फूहड़ता का प्रतीक बनता जा रहा है। विशुद्ध पश्चिमी संस्कृति से आयात किया हुआ यह कुशील पर्व हमारी संस्कृति और सभ्यता पर भयंकर कुठाराघात कर रहा है। इस दिन के प्रारंभ के बारे में विदेशों की लगभग 32 घटनाओं का उल्लेख मिलता है। तीसरी शताब्दी से प्रारंभ इस पर्व को शहीदों, पुरानी मान्यताओं, प्रकृति के परिवर्तन आदि से जोड़ा जाता रहा है। परन्तु इस दिन को विशेष महत्व मिलता है संत वेलेन्टाईन की घटना से। रोम में तीसरी शताब्दी में सम्राट क्लॉडियस ने अपने राज्य में शादी करने पर प्रतिबंध लगा दिया तो एक चर्च के पादरी संत वेलेन्टाईन ने इसका बहुत विरोध किया और अनेक सरकारी अधिकारियों का चुपचाप विवाह करवाया। इससे नाराज होकर सम्राट ने उसे फांसी देकर मरवा दिया बस उसी की याद में वेलेन्टाईन डे की शुरुआत हो गई। इसी तरह की दो-तीन कहानियाँ और भी मिलतीं हैं।1990 तक इसका प्रभाव भारत में नहीं था परन्तु इसके बाद विदेशी कम्पनियों ने अपने फायदे के लिये धीरे-धीरे इसका प्रभाव बढ़ाना शुरु किया और आज यह पूरे देश में प्रेमियों का महापर्व बन गया है। एक अनुमान के अनुसार इस दिन के लिये हमारे देश में लगभग 250 करोड़ रुपये के ग्रीटिंग, टेडी बियर, चॉकलेट गुलाब के फूल, उपहार आदि का व्यापार होता है। इस दिन हर कीमत पर प्रेमी और प्रेमिका मिलना चाहते हैं। वे घर से बहाना बनाकर, झूठ बोलकर अपने माता-पिता से विश्वासघात करके भी अपने फूहड़ प्रेम को जीवंत रखना चाहते हैं। आज के प्रेम में प्रेम कम, वासना अधिक है। प्रेम करना कोई अपराध नहीं है परन्तु प्रेम की मर्यादायें होना चाहिये। 20-25 वर्ष तक पालन-पोषण कर हर इच्छा को पूरा करने वाले माता-पिता के त्याग और समर्पण को कैसे भूला जा सकता है? लेकिन आश्चर्य यह है कि सीता, अनंगसरा, महावीर, बुद्ध, विवेकानन्द के देश में बिना शादी के रहना अधिकार और आदर्श समझा जाने लगा है। अपनी अनैतिकता को सिद्ध करने के लिये उन्हें कृष्ण और राधा के प्रेम झूठे तर्क तो याद आते हैं परन्तु न्याय-नीति और देशभक्ति के लिये महात्मा गांधी, भगत सिंह, लालबहादुर शास्त्री याद नहीं आते। उन्हें रानी पदमावती का जौहर, सीता की अग्नि परीक्षा, अंजना का वियोग और धीरता, चन्दनबाला का संघर्ष और उसका अटूट शील याद नहीं आता। हम कैसे भूल गये कि बन्धुश्री और उसके परिवार ने विधर्मी

राजा से विवाह से बचने के लिये अरबों रुपये की संपत्ति त्यागकर राज्य छोड़ दिया था ?

आज के युवाओं को 10-12 प्रेम सम्बन्धों को रखकर छोड़ने और अनैतिक सम्बन्धों रखने और फिर अपने विवाह को राष्ट्रीय महोत्सव सिद्ध करने वाले फिल्मी दुनिया के एक्टर-एक्ट्रेस तो याद आते हैं, अपनी उम्र से कई वर्ष बड़े व्यक्ति से विवाह को विशुद्ध प्रेम का नाम देने वाले तो आदर्श लगते हैं परन्तु अपने शील की रक्षा में अपने प्राण तक कुर्बान करने वाली देश की महान नारियाँ याद नहीं आतीं। एक ओर देश का सबसे धनी अम्बानी परिवार अपने बेटी के विवाह में परम्पराओं और मर्यादाओं का आदर्श स्थापित करता है तो दूसरी तरफ कुछ वर्षों के वासनामयी नकली सुख के लिये विजातीय प्रेम विवाह करने को जायज सिद्ध करने की होड़ लगी है। प्रेम के अंधेपन में इन्हें परिवार की सामाजिक इज्जत, न कुल की मर्यादा की कोई परवाह नहीं होती। ये नहीं समझते कि हमारे इस कदम से माता-पिता और पूरे परिवार को जीवन भर कलंक लेकर जीना पड़ेगा। कुछ वर्ष पूर्व ही हैदराबाद के प्रतिष्ठित जैन व्यापारी ने अपनी बेटी के दूसरे धर्म में विवाह करने से दुःखी होकर ट्रेन के सामने कटकर जान दे दी। बेटे भी बड़े होकर अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लगे हैं। महानगरों में छठवीं-सातवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों में भी गर्लफ्रेन्ड-बॉयफ्रेन्ड का खतरनाक खेल खेला जा रहा है। लव मैरिज करने वाले कपल्स की प्यार की पूरी कहानी का वीडियो बनाकर संगीत संध्या में दिखाया जाना, प्री वैडिंग शूटिंग करवाना बेशर्मी की पराकाष्ठा है। इससे हमारे परिवार के बच्चे किस प्रकार संस्कारित होंगे आप स्वयं सोच सकते हैं ..

इसमें दोष किसी का भी हो परन्तु माता-पिता भी अपनी भूमिका से इंकार नहीं कर सकते। अपने बच्चों को भौतिक सुविधाओं देने के साथ उन पर कड़ी निगाह भी रखना होगी, उनकी शिक्षा के साथ उनकी संगति पर भी ध्यान रखना होगा, समय रहते उन्हें इन बुराईयों के दुष्परिणाम बताने होंगे और सबसे बड़ी बात कुछ वर्षों के नकली सुख के लिये आगामी भवों के भयंकर दुःखों को और मोक्षमार्ग की आधारशिला के लिये शील और सदाचार के संस्कार भी समझाने होंगे। एक बार विधर्मी से विवाह करने का मतलब है असंख्य भवों तक जिनधर्म नहीं मिलने की पूरी तैयारी।

हमारे प्रयासों के बाद फिर कुछ भी हो, लेकिन माता-पिता किसी भी परिस्थिति में उनके अनैतिक कार्य को सामाजिक और पारिवारिक मान्यता न दें - जिससे सामाजिक सुरक्षा और मर्यादायें बनी रह सकें। हमें अपने गौरवशाली इतिहास की रक्षा हर हाल में करना होगी चाहे इसके लिये हमें अपने संतान मोह का बलिदान देना पड़े, वरना गौरवशाली परम्पराओं और महान सतियों के धर्म में कलंक लगाने पर इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा....।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

हमारे जैन तीर्थ

अतिशय क्षेत्र एवं तपोभूमि

तिरुमलै/अरिहंतगिरि

तमिलनाडु में बहुत बड़ी संख्या में दिगम्बर जैन मंदिर है। यहां के छोटे-छोटे गांवों में अति प्राचीन भव्य जिनमंदिर हैं। इनमें से एक है तिरुवण्णामलै जिले की पोलूर तहसील में स्थित तिरुमलै तीर्थ। चैन्नई से 155 किमी. की दूरी पर स्थित तिरुमलै क्षेत्र को अरिहंतगिरि या अर्हन्तसुगिरि अर्थात अरहंतों का पर्वत भी कहा जाता है। यह चतुर्थकालीन क्षेत्र है। यहां पर्वत पर पांच मंदिर है। इसमें शिखा मणिनाथ के नाम से प्रसिद्ध श्री नेमिनाथ भगवान की 18 फुट ऊँची प्रतिमा है जो कि 1800 वर्ष प्राचीन है। पर्वत पर वरदत्त गणधर, वृषभाचार्य, आचार्य समन्तभद्र के चरण चिन्ह भी स्थापित हैं। साथ अनेक मुनि विहार गुफायें, प्राचीन काल के दर्शन भी होते हैं। 335 मीटर ऊँचे पर्वत पर जाने के लिये 140 सीढ़ियाँ हैं। आचार्य अकलंक देव ने यहाँ गुरुकुल परंपरा आरंभ की थी। यहां ताड़पत्र पर लिखे गये लगभग 100 ग्रंथ उपलब्ध है। दसवीं शताब्दी में पहाड़ की तलहटी में चोलवंशी राजाओं की बड़ी बहन कुन्दैवे ने जिनमंदिर बनवाया था। गुफा मंदिरों में तीर्थंकरों की प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं। एक गुफा में वादिभ सिंह की समाधि है।

इस क्षेत्र पर आवास और भोजन की पर्याप्त सुविधायें हैं। यहाँ पर एक गुरुकुल भी संचालित है। यह क्षेत्र आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूर मलै से 47 किमी., कांचीपुरम् से 50किमी, वेल्लोर से 40किमी की दूरी पर है। इस क्षेत्र के आसपास अनेक प्राचीन जैन तीर्थ दर्शनीय है। अकेले तिरुवण्णमलै जिलें में ही 44 प्राचीन जैन तीर्थ क्षेत्र हैं।

तिरुमलै का संपर्क सूत्र

04181-244325, 09345982671, 09092600778

पांचों पांडवों का वैराग्य

हस्तिनापुर राज्य के लिये कौरवों व पांडवों के मध्य कुरुक्षेत्र में भयंकर युद्ध हुआ था। पांडवों के प्रमुख युधिष्ठिर और कौरवों के दुर्योधन थे। यह युद्ध लंबे समय तक चला था। अंत में पांडवों को विजय प्राप्त हुई, कौरवों का सर्वनाश हुआ। विजय के पश्चात् युधिष्ठर को हस्तिनापुर राज्य का राजा बनाया गया। पांडवगण ने हस्तिनापुर राज्य का सुचारु रुप से संचालन किया।

पांडवों के शासनकाल में एक भयंकर घटना घटी। द्वारका नगरी अग्नि में जलकर भस्म हो गई। उनके सगे संबंधियों की भी इस अग्निकांड में जलने से मृत्यु हो गई। पांचों पांडवों को इससे गहरा आघात पहूंचा।

पांचों पांडव आत्म शांति के लिए अपनी माता कुंती तथा महारानी द्रोपदी सहित 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ के समवशरण में गये। वहां पहुंचकर श्रद्धाभक्ति सहित उनको प्रणाम किया। वे स्तुति करने लगे – हे नाथ ! आप इस संसार रुपी समुद्र को पार उतारने वाले नाका समान हैं, आप केवलज्ञान द्वारा संसार के अंज्ञान को दूर करने वाले है, आप कामवासना को जीतने वाले हैं। स्तुति करने के पश्चात् वे सभी धर्मसभा में यथा स्थान बैठ गये।

तत्पाश्चात भगवान नेमिनाथ की दिव्यवाणी में धर्मोपदेश प्रारंभ हुआ। सुख का मुख्य साधन धर्म ही है। छः काय जीवों की रक्षा करना ही दया है। इस तरह मुनि धर्म और श्रावक धर्म का विस्तार से वर्णन किया। अंत में पांडवों ने अपने पिछले भवों की जानकारी के लिए भगवान से निवेदन किया। पिछले भवों का वर्णन सुनकर युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, माता कुन्ती, द्रोपदी का ह्रदय वैराग्य से भर गया। वे सभी कहने लगे कि इतना लंबा समय सांसारिक भागों में गुजार दिया। दीक्षा लेने का अब समय आ गया है।

पांचों पांडव वापिस अपने महलों की ओर गये और अपने पुत्रों को राज्य का भार सौंप दिया। तत्पश्चात् पांचों पांडवों ने परिग्रह त्याग, केश लोंच किया और तेरह प्रकार के चारित्र ग्रहण कर जिन दीक्षा ली। इसके साथ-साथ कुंती, द्रोपदी, सुभद्रा आदि ने आर्यिका राजमती के समीप जाकर जिन दीक्षा लेकर संयम धारण कर लिया।

विहार करते हुये ये पांडव सौराष्ट्र देश पहुंच गये। वहा के शत्रुंजय पर्वत पर आत्मध्यान में लीन हो गये। दैवयोग से दुर्योधन का भांजा कुमुर्धर वहां पहुंच गया। जो अत्यंत क्रूर स्वभावी था। जब उसने पांडवों को आत्म लीन देखा तो उसके हृदय में वध करने की भावना जागृत हो गई। उसी समय कुमुर्धर ने लोहे के आभूषण तैयार करवाये। आभूषणों को अग्नि में खूब तपाकर पांचों पांडवों को पहिना दिये। इन पांचों मुनियों का शरीर जलने लगा और धुआं निकलने लगा। पांचों भाईयों ने जान लिया कि उनका अंतिम समय है ओर इस महा भयंकर उपसर्ग को आत्म चिंतवन में एकाग्रचित होकर ध्यान करना चाहिये। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन को मोक्ष पद मिला। तीनों ने हमेशा के लिये अतुलनीय मोक्ष प्राप्त किया। दो भाई नकुल, सहदेव उपसर्ग सहते हुये सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हुये। जहां से पुनः मनुष्य शरीर धारण कर मोक्ष पद प्राप्त करेंगे।

राजमती कुन्ती, सुभद्रा एवं द्रोपदी ने भी सन्यास धारण करके अपना शरीर छोड़ा। वे सभी स्त्री पर्याय को छोड़कर 16वें स्वर्ग में देव उत्पन्न हुये। ये सभी पुनः मनुष्य भव को प्राप्त कर साधना द्वारा कर्मों का नाश कर मोक्ष पद प्राप्त करेंगे।

सोच

एक डॉक्टर कुछ काम कर रहा था। उसका बेटा उसे बार-बार परेशान कर रहा था। पिता ने उससे बचने के लिये संसार का एक नक्शा (Map) उसे टुकड़े-टुकड़े करके दिया और कहा - इसे वापस पहले जैसा जोड़ो। डॉक्टर ने सोचा कि इस नक्शे को जोड़ने में बहुत टाइम लगेगा, तब तक वह अपना काम शांति से पूरा कर लेगा। लेकिन बच्चे ने कुछ ही मिनिट में नक्शा ज्यों का त्यों जोड़ दिया।

डॉक्टर पिता ने आश्चर्य से पूछा - बेटा ! इतनी जल्दी नक्शा कैसे जोड़ लिया ? बेटे ने उत्तर दिया - पापा ! नक्शे के पीछे एक आदमी का फोटो था, मैंने उल्टा रखकर आदमी को जोड़ा। सोचा कि यदि आदमी ठीक हो जायेगा तो संसार अपने आप ठीक हो जायेगा। बेटे की बात साधारण होकर भी उसकी सोच बहुत गहरी थी।

हमारे महापुरुष

अमर जैन शहीद

लाला हुकमचंद जैन कानूनगो

भारतीय इतिहास में 1857 की क्रांति का महत्वपूर्ण योगदान है। कहा जाता है कि इसी क्रांति से भारत की अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के प्रयासों का शुभारंभ हुआ। इस क्रांति में अपने प्राण अर्पित करने वाले लाला हुकमचंद जी का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा। लाला हुकमचंद जी ने अपनी शिक्षा और प्रतिभा के बल पर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त कर लिया। सन् 1841 में मुगल बादशाह ने लाला जी को झांसी और करनाल जिले का कानूनगो और प्रबंधकर्ता नियुक्त किया। इस बीच अंग्रेजों ने हरियाणा को अपने अधीन कर लिया। सन् 1857 में जब स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा तो लाल जी को अंग्रजों के विरुद्ध कुछ करने का विचार किया और उन्होंने दिल्ली आकर बादशाह जफर से भेंट की और एक देशभक्त सम्मेलन में शामिल हुये, इस सम्मेलन में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और तत्याटोपे जैसे देशभक्त शामिल थे। जब अंग्रेजों की सेना झांसी होकर दिल्ली पर हमला करने जा रही थी तब उस सेना पर लाला हुकमचंदजी ने हमला कर उसे रोकने का प्रयास किया। लाला जी ने बादशाह जफर को एक पत्र लिखकर सेना की सहायता मांगी, पर उस पत्र का कोई उत्तर नहीं आया और इसी बीच अंग्रेजों ने बादशाह जफर को पकड़कर रंगून (म्यांमार) जेल में डाल दिया। जब अंग्रेज अधिकारी ने बादशाह की फाइलों को देखा तो उसमें लालाजी का लिखा हुआ पत्र उन्हें मिला और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध पत्र लिखने वाले लालजी के खिलाफ कड़ी कारवाही का आदेश दिया। लालाजी के घर पर छापा मारकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

18 जनवरी 1858 को उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई और लालाजी के मकान में ही उन्हें फांसी दे दी गई। अंग्रेजों ने अत्याचार करते हुये डर पैदा करने के लिये लालाजी का शव उनके संबंधियों को न देकर दफना दिया और लालाजी के 13 साल के भतीजे फकीरचंद को पकड़कर वहीं पर फांसी चढ़ा दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लाला हुकमचंद जी की याद में झांसी में उनके नाम पर पार्क बनवाया गया और उनकी प्रतिमा विराजमान की गई।

हमारे मुनिराज

1. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें आम के वृक्ष का सूखा तना देखकर वैराग्य हो गया ?

उत्तर- द्वीपायन मुनिराज को ।

2. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें शौरीपुर में केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर- श्री अलस कुमार मुनिराज ।

3. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने राजा भोज की सभा में सैकड़ों विद्वानों को परास्त कर दिया था ?

उत्तर - श्री शान्तिसेन महाराज ।

4. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें आचार्य मानतुंग ने अपना आचार्य पद सौंपा था ?

उत्तर - श्री गुणाकर महाराज ।

5. वे कौन से मुनिराज थे जिनके गले में 4 दिन तक मरा हुआ सर्प पड़ा रहा ?

उत्तर - मुनि यशोधर ।

6. वे कौन से मुनिराज थे जिनका सीता ने पूर्व भव में अपमान किया था ?

उत्तर - श्री सुदर्शन मुनि ।

7. वे कौन से मुनिराज थे जिन पर 7 दिन तक उपसर्ग हुआ था ?

उत्तर - मुनि पार्श्वनाथ ।

8. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें भगवान नेमिनाथ प्रथम दर्शन करके वैराग्य हो गया था ?

उत्तर - श्री गजकुमार मुनिराज ।

9. वे कौन से मुनिराज जिनसे अंजन चोर ने मुनि दीक्षा ली थी ?

उत्तर - श्री देवर्षि मुनिाज ।

10. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें भगवान आदिनाथ के प्रथम उपदेश से वैराग्य हो था ?

उत्तर - श्री वृषभसेन मुनिराज ।

11. वे कौन से मुनिराज थे जिनके उपदेश से पटना के राजा धणात्रीवाहन मुनिराज बन गये ?

उत्तर - श्री शिवभूषण मुनिराज ।

12. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे दुःशासन ने दीक्षा ली थी ?

उत्तर - विदुर मुनिराज ।

13. वे कौन से मुनिराज थे जो गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) से मोक्ष पधारे ?

उत्तर - सुप्रतिष्ठ केवली

14. वे कौन से मुनिराज थे जिनके उपदेश सुनकर चाणक्य को वैराग्य हो गया ?

उत्तर - श्री महीधर मुनिराज

15. वे कौन से मुनिराज थे जो पंचम काल के अंत में मुनिराज होंगे ?

उत्तर - श्री वीरांगज मुनिराज ।

16. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें अपनी मृत्यु के आठ दिन पहले वैराग्य हो गया था ?

उत्तर - श्री चिलाल मुनिराज

सेठ लक्ष्मीचंदजी

जयपुर राज्य के मालपुरा गांव के जैन श्रावक जिनदास के दो पुत्र थे । फतहचंद और मनीराम । मनीराम आजीविका की तलाश में दूसरे गांव जा रहे थे । रास्ते में उन्हें एक व्यक्ति बहुत बीमारी की हालत में मिला । मनीराम ने उनकी रास्ते में ही सेवा की और उन्हें उचित स्थान पर पहुँचाया । मनीराम की सेवा से वह व्यक्ति मौत से बच गया । वे व्यक्ति ग्वालियर राजघराने के सिन्धिया परिवार द्वारा सम्मान प्राप्त प्रतिष्ठित सेठ राधामोहनजी पारिख थे । उनके स्वार्थी नौकर उनका सारा माल लेकर उन्हें बुरी हालत में छोड़कर भाग गये थे ।

राधामोहनजी ने मनीराम का उपकार मानते हुये उन्हें ग्वालियर बुला लिया और उन्हें कपड़े के व्यवसाय में लगा दिया । ग्वालियर राजघराने की रानी बैजाबाई के आदेश से राधामोहन द्वारकाधीश श्रीकृष्ण का मंदिर बनाने मथुरा आ गये और साथ में मनीराम को भी ले आये । उन्होंने सारा काम मनीराम के जिम्मे छोड़कर स्वयं श्रीकृष्ण की भक्ति में रम गये । बाद में सेठ मनीराम ने जम्बूस्वामी का जिनमंदिर भी बनवाया। 1825 में सेठ मनीराम ने प्रसिद्ध विद्वान और छहढाला के रचनाकार श्री दौलतरामजी अपने पास रखा । राधामोहन जी की कोई संतान नही ंथी, उन्होंने मनीराम के बड़े पुत्र लक्ष्मीचंद को अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाया । सेठ लक्ष्मीचंद ने भी राधामोहन की भावना अनुसार व्यापार को संभाला और अनेक परोपकार के कार्य किये । अंग्रेज अफसर भी सेठ लक्ष्मीचंदजी का बहुत सम्मान करते थे । अनेक बार उन्होंने मथुरा की जनता की अंग्रेजों के अत्याचारों से रक्षा की । सेठ लक्ष्मीचंद स्वयं जैन धर्म के दृढ़ श्रद्धानी थे परंतु उनके छोटे भाई राधाकिशन और गोविंददास ब्राह्मण साधुओं के भक्त थे । इन भाईयों ने वृंदावन में रंगजी का विशाल मंदिर बनवाया और सेठ लक्ष्मीचंद जी के पुत्र सेठ रघुनाथजी भी जैनधर्म में रद्धा रखते थे । इन्होंने चौरासी के मंदिर में भगवान अजितनाथ की प्रतिमा विराजमान करवाई और चौरासी क्षेत्र पर प्रतिवर्ष जिनेन्द्र रथयात्रा का आठ दिवसीय कार्यक्रम भी प्रारंभ कराया ।

ऐसे अनेक श्रेष्ठी श्रावकों ने जिनधर्म के उत्थान में अपना योगदान दिया ।

मस्जिदों में जैन धर्म के अवशेष

जैन धर्म की संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन है। हम समय-समय पर आपको जैनत्व के गौरव से परिचय कराते रहते हैं। भारत में अनेक प्राचीन जैन मंदिरों को तोड़कर या परिवर्तन कर उन्हें हिन्दू मंदिरों और मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया गया। दिल्ली के प्रसिद्ध कुतुबमीनार, दौलताबाद किला, अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा मस्जिद, भोजनशाला की मस्जिद, सीता की रसाई मस्जिद, मीनाक्षी मंदिर, तिरुपति बालाजी का मंदिर, पंढरपुर का विख्यात मंदिर आदि इसके प्रमाण है।

15 सितंबर 2017 को जापान के प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे अहमदाबाद में बुलेट ट्रेन का शिलान्यास करने भारत आये थे तब श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वागत करते हुये उन्हें अमदाबाद के प्रमुख स्थानों में ले जाकर भारत की संस्कृति का परिचय कराया। इन स्थानों में वे अहमदाबाद की सैयद मस्जिद भी गये। इसी सैयद मस्जिद के पास स्थित जामा मस्जिद है। यह मस्जिद संभवतः प्राचीन जैन मंदिर के स्वरूप बदलकर या जैन मंदिरों की सामग्री का उपयोग कर बनाई गई है। इसके उत्कृष्ट कलायुक्त पिलर्स गुम्बद जैन संस्कृति का परिचय देते हैं।

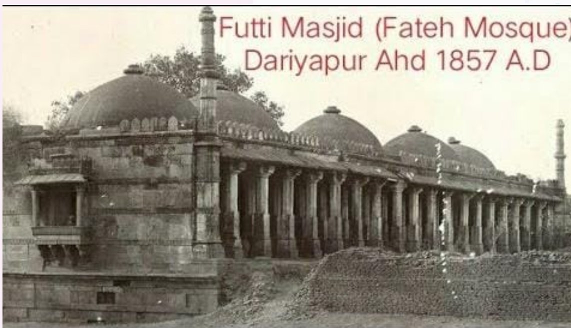

1879 में पुरातत्व विभाग के एन.बी. बेट्स द्वारा संकलित एवं जेम्स कैम्पवेल द्वारा प्रकाशित बॉम्बे गजट के पेज नं. 217 पर लिखा है कि अहमदाबाद की जामा मस्जिद के मुख्य द्वार में फर्श का काले पाषाण की भगवान पार्श्वनाथ

की प्रतिमा का हिस्सा या कमर के नीचे का हिस्सा स्थापित है। भगवान पार्श्वनाथ के चिन्ह सर्प से यह बात सिद्ध होती है। इसी बात का उल्लेख आर्कियोलॉजिकल ऑफ वेस्टर्न इंडिया में भी किया गया है।

जामा मस्जिद के निर्माण में उपयोग की गई सामग्री में देलवाड़ा, रणकपुर और पालीताना की छटा मिलती है।

पूर्व में जैनों के राजनगर के नाम से प्रसिद्ध अहमदाबाद का पूर्व नाम कर्णावती या श्री नगर था। इसकी स्थापना गुजरात के सोलंकी राजा करनादेवा ने संभवतः 1073 में की थी। बाद में मुस्लिम शासक अहमद शाह ने इस नगर का जीर्णोद्धार कराया और 4 मार्च सन् 1411 को इसका नाम अहमदाबाद कर दिया। जामा मस्जिद के एक दीवाल पर इसका उल्लेख है।

अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन के पास सरसपुर में लगभग 1638 में शांतिदास जी जैन द्वारा चिंतामन के नाम से प्रसिद्ध जैन मंदिर का निर्माण कराया गया। सन् 1644–1676 के दंगों में मुगल शासक औरंगजेब ने मंदिर में एक गाय का गला काटकर इसे अपवित्र कर दिया और जैन प्रतिमाओं को तोड़कर मस्जिद में परिवर्तित कर दिया। जैन समाज द्वारा दिल्ली में शासक शाहजहाँ से शिकायत की और शाहजहाँ ने पूर्व की भांति मंदिर स्थापित करने के आदेश दिये। शांतिदासजी ने मूल प्रतिमा को जव्हेरीवाडा में स्थानांतरित कर दिया था। इस घटना का विवरण बॉम्बे गजट के पेज नं. 285 पर प्रकाशित किया गया है।

अहमदाबाद की फतेह मस्जिद और रानी मस्जिद में भी जैन मंदिरों की सामग्री का उपयोग किया गया था।

जामा मस्जिद के गाइड द्वारा मस्जिद की जानकारी देते हुये यह बताया जाता है कि इस मस्जिद में इस्लामिक वस्तुकला नहीं बल्कि जैन वस्तुकला है। जैन वस्तुकला में प्रकृति, जानवर, मनुष्य आदि की आकृति बनाई जाती हैं जबकि इस्लामिक वस्तुकला में इनका उपयोग वर्जित है।

इस संबंध में विशेष जानकारी के यिले आप इस लिंक का प्रयोग कर सकते हैं। https://youtube.be/puup6YzUESw

साभार – विश्व जैन संगठन

ऐतिहासिक महापुरुष

पंडित प्रभुदास जी

जैन कुल में जन्में अनेकों महापुरुषों ने जिनधर्म की प्रभावना में अपना अतुल्यनीय योगदान दिया है। इनमें से एक थे पंडित प्रभुदास।

बिहार प्रांत के आरा शहर के निवासी बाबू प्रभुदास बहुत धार्मिक, संस्कृत के जानकार, शास्त्र स्वाध्यायी, चरित्रवान, दानी और उदारवादी व्यक्ति थे। अपनी विद्वता के कारण वे बाबू प्रभुदास से पंडित प्रभुदास कहलाने लगे थे। इन्होंने 1856 में वाराणसी में गंगा नदी के भदैनी घाट पर भगवान सुपार्श्वनाथ का मंदिर और धर्मशाला बनवाई थी और उसी समयच भगवान चंदाप्रभु की जन्मभूमि चन्द्रपुरी में भी गंगा तट पर जिनमंदिर बनवाया था। छहढाला ग्रंथ के रचनाकार पंडित दौलतराम जी के संपर्क में आये। प्रभुदास जी पंडित दौलतराम जी का बहुत आदर करते थे। प्रभुदास जी का आचरण इतना उत्कृष्ट था कि वे 40वर्ष तक एक समय ही भोजन करते रहे। इनका 64 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। इनके एकमात्र पुत्र बाबू चन्द्रकुमार थे जिन्होंने कौशांबी में जिनमंदिर बनवाया। दुखद बात यह है कि इतने उदारमना श्रेष्ठी चन्द्रकुमार जी का मात्र 31 वर्ष अल्प आयु में स्वर्गवास हो गया।

राय बद्रीदास

मूलतः लखनऊ में रहने वाले श्रीमाल वंश के राय बद्रीदास प्रसिद्ध जौहरी थे। अंग्रेजों के बढते प्रभाव के कारण 1853 में वे सपरिवार लखनऊ छोडकर कोलकाता चले गये और बहुत कम समय में अपनी ईमानदारी, व्यवसाय कला के दम पर वे कोलकाता के प्रमुख जौहरी बन गये। सन् 1871 में कोलकाता के वायसराय लार्ड मेयो ने इन्हें विशिष्ट पद दिया और रायबहादुर की उपाधि से सम्मानित किया। इनका परिवार बहुत धार्मिक था। कोलकाता के जैन मंदिर के पास एक बड़ा तालाब था जिसमें लोग मछलियों का शिकार किया करते थे। यह देखकर श्रावकों को बहुत पीड़ा होती थी। एक दिन इनकी धर्मप्रेमी माँ ने कहा कि ये जीव हिंसा बंद होनी चाहिये। माँ की भावना जानकर इन्होंने यह तालाब मंहगे मूल्य में खरीद लिया और मछलियों का शिकार कर दिया। इतना ही नहीं बद्रीदास जी ने उस तालाब को भरवाकर बहुत सुंदर उद्यान (पार्क) और एक जिनमंदिर भी बनवाया।

बद्रीदास जी ने बहुत दूर-दूर तक धार्मिक यात्रायें की। आगरा में एक स्थान पर खुदाई करने पर एक भगवान शीतलनाथ की प्रतिमा प्राप्त हुई। सेठ जी अत्यंत उत्साह से वह प्रतिमा कोलकाता ले आये, फिर धूमधाम से प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई। सम्मेद शिखर जी में एक अंग्रेज द्वारा सुअर काटने का कत्लखाना लगाया गया था जिसे बद्रीदास जी ने अपने प्रभाव से बंद करा दिया। सेठ जी आज भी अपने कार्यों से अमर हैं।

सोच

(पुत्र का पत्र पिता के नाम)

बुजुर्ग माँ-बाप का इकलौता बेटा अमेरिका में जॉब करता है। माँ-बाप वृद्ध होने के कारण बीमार रहते हैं और हमेशा अकेलापन महसूस करते हैं। बहू और पोता भी अमेरिका में बेटे के साथ ही रहते हैं। घर की सभी समस्याओं को देखकर पिता अपने बेटे को एक पत्र लिखा। इस पत्र के जवाब में पुत्र ने भी एक पत्र लिखा।

आपके आशीर्वाद से,

आपकी भावनाओं /इच्छाओं के अनुरूप मैं अमेरिका में व्यस्त हूँ। यहाँ धन/बंगला आदि सभी सुविधायें हैं। बस समय नहीं है।

मैं आपसे मिलना चाहता हूँ, आपके पास बैठकर आपसे बातें करना चाहता हूँ,

आपके दुःख दर्द कुछ कम करना चाहता हूँ परंतु क्षेत्र की दूरी बच्चों के अध्ययन की मजबूरी, ऑफिस काम करने की मजबूरी...

क्या करूँ ? कैसे कहूँ ?

मैं आपको रुपये तो भेजता हूँ पर चाहकर भी स्वर्ग जैसी जन्मभूमि और अपने माँ-बाप के पास नहीं आ सकता।

पिताजी ! मेरे पास अनेक संदेश आते हैं।

कि "माता-पिता सब कुछ बेचकर भी बच्चों को पढ़ाते हैं
और बच्चे सबको छोड़कर विदेश जाकर बस जाते हैं,
बेटे माँ बाप के किसी काम नहीं आते हैं।"

पर पिताजी ! मैं कहा जानता था कि
इंजीनियरिंग क्या होती हैं, मुझे कहां पता था कि अमेरिका कहाँ है
मेरा कॉलेज, पैसा और अमेरिका तो बस आपकी गोद ही थी न

आपने मंदिर को मुख्य न करके स्कूल पहले जाने का कहा,

पाठशाला नहीं, कोचिंग भेजा

आपने अपने मन में दबी इच्छाओं को पूरा करने के लिये मुझे जीवन में रुपये की जरुरत समझाई, इंजीनियरिंग और पद प्रतिष्ठा को ध्येय बनाने की शिक्षा दी।

माँ ने भी दूध पिलाते हुये –

'मेरा राजा बेटा बड़ा आदमी बनेगा, गाड़ी बंगला होगा, हवा में उड़ेगा' कहा था। मेरी लौकिक की उन्नति के लिये हमेशा कामना की।

मेरे पूज्य पिताजी !

मैं बस आपसे इतना पूछना चाहता हूँ कि

मैं आपकी सेवा नहीं कर पा रहा,

मैं बीमारी में दवा देने नहीं आ पा रहा,

मैं हजारों किलोमीटर दूर बंगले और आप गांव के उसी पुराने मकान में

क्या इसका सारा दोष सिर्फ मेरा ही है.....

– आपका पुत्र

प्रत्येक माँ–बाप यह सोचें कि दुनिया की हर समस्या सहकर हम अपनी संतान को सुख–सुविधा देना चाहते हैं, उन्हें ऊँचे पर देखना चाहते हैं परंतु जिनधर्म के संस्कार न देकर उनके भविष्य निर्माण में आप अपना भविष्य तो खराब नहीं कर रहें....

जूठा भोजन

एक बालक प्रतिदिन अपने स्कूल में अपना टिफिन का पूरा भोजन अच्छी तरह से साफ करके खाता था। उसके टिफिन में एक भी दाना बाकी नहीं रहता था। उसके दोस्त कंजूस कहकर उसका मजाक उड़ाते थे, लेकिन वह अपने दोस्तों का मजाक सुनकर भी अपने काम में लगा रहता था। एक दिन उसके दोस्त ने पूछ लिया – आखिर क्या बात है कि तुम अपने टिफिन में एक दाना भी नहीं छोड़ते ?

उसका उत्तर बहुत सुंदर था। वह बोला – ये मेरे पिता का आदर है जो इतनी मेहनत से अपने कमाये रुपये से घर में अनाज खरीदकर लाते हैं।

यह मेरी माँ का सन्मान है जो सुबह जल्दी उठकर बहुत प्रेम और उत्साह से मेरे लिये टिफिन तैयार करती है। यह आदर उन किसानों का है जो खेतों में कड़ी मेहनत करके अनाज उगाते हैं।

इसलिये जूठा छोड़ने में शान नहीं बल्कि इन सबका अपमान है। यह सुनकर दोस्त बहुत शर्मिन्दा हुये और उन्होंने उससे मजाक करना बंद कर दिया।

प्रेरक कथा

उत्तम कार्य

राजा राजकार्य से किसी दूर देश जा रहा था। उसकी चार रानियाँ थीं। उसने प्रस्थान करते समय चारों रानियों को बुलाया और कहा हे रानियो ! मैं राज्य के कार्य के लिये दूर देश जा रहा हूँ, मुझे लौटने में बहुत दिन भी लग सकते हैं। तुम चारों मेरे लिये एक समान हो और मैं सभी से बहुत प्रेम करता हूँ। आप लोग मुझे एक कागज पर लिखकर दें कि मैं आपके लिये परदेश से क्या लेकर आऊँ ? राजा की बात सुनकर सभी रानियों ने अपनी मनवांछित वस्तुओं की सूची बनाकर दे दी।

बहुत दिनों के बाद जब राजा लौटकर आया तो रानियों ने उसका स्वागत किया। राजा ने सभी का सामान उनके कमरे में पहुँचाने का आदेश दिया और सीधे छोटी रानी के कमरे में चला गया। तीनों रानियाँ को यह देखकर आश्चर्य हुआ। बाद में राजा से इसका कारण पूछने पर राजा ने बताया कि बड़ी रानी ने सूची में उत्तम साड़ी और गहनों के नाम लिखे थे, दूसरी रानी की सूची में श्रृंगार की सामग्री सूची थी, तीसरी रानी के सूची में अनेक स्वादिष्ट व्यंजनों की सूची थी। पर चौथी रानी की सूची में लिखा था - हे स्वामी! मेरा अस्तित्व आपसे है। आप स्वस्थ और सकुशल वापस आ जायें - यही मेरी एक मात्र कामना है। इसलिये मैं सीधे छोटी रानी के पास गया। यह बात सुनकर सभी रानियाँ शर्मिंदा हो गईं।

ऐसे ही हम आत्मकल्याण के नाम पर अनेक आयोजन करते हैं, पूजन-विधान, दान, तीर्थयात्रायें, शुद्ध भोजन आदि की क्रियायें पालते हैं पर आत्मा की दृष्टि नहीं करते, उसका अनुभव नहीं करते। इन शुभ क्रियाओं के फल में देव आदि उत्तम गति तो मिल जातीं हैं परन्तु सच्चा सुख नहीं मिल पाता। इसलिये आत्मा की अनुभूति ही सबसे उत्तम कार्य है।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक – विराग शास्त्री

जनवरी JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

फरवरी FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	5	4	6	7	8
9	10	12	11	13	14	15
16	17	19	18	20	21	22
23	24	26	25	27	28	

मार्च MARCH

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	5	4	6	7	8
9	10	12	11	13	14	15
16	17	19	18	20	21	22
23	24	26	25	27	28	29

अप्रैल APRIL

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

मई MAY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

जून JUNE

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

पता – सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, ज

Calender 2025

जुलाई — JULY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अगस्त — AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

सितंबर — SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

अक्टूबर — OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

नवंबर — NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

दिसंबर — DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

बलपुर 482 002 (म.प्र.) मोबा. 9752756445

जय जिनेन्द्र का इतिहास

आज से लगभग 175 वर्ष पूर्व वि.स. 1884 में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी दिन मंगलवार को अनेक पूजनों के रचनाकार कविवर पं. वृन्दावनदास जी ने काशी से दीवान अमरचन्दजी को जयपुर पत्र लिखा था। इसमें इन्होंने पत्र के प्रारम्भ में दीवान साहब को 'जय जिनेन्द्र' कहकर सम्बोधित किया है।

वृन्दावन विलास में लिखा है -

वृन्दावन तुमको कहत है श्रीमत जयति जिनन्द ।
काशीतें सो बांचियो, अमरचन्द सुखकन्द ।।

और इतना ही नहीं, अन्त में पुनः ऋषभदास, घासीराम आदि समाज के अन्य प्रमुख पंच लोगों को भी जय जिनेन्द्र कहकर ही ही अभिवादन किया है।

वृन्दावन विलास में लिखा है -

ऋषभदास पुनि घासीराम और पंच ने सुगुन निधान।
बिगति बिगति श्री जयति जिनन्द, कहियों सबसों धरि आनन्द ।।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान में जैन समाज में पारस्परिक अभिवादन हेतु 'जय जिनेन्द्र' कहने की जो परम्परा है, वह कोई नई परिपाटी नहीं है, अपितु कम से कम से दोसौ वर्ष प्राचीन है।

- डॉ.वीरसागर जैन, दिल्ली

एक जनश्रुति यह भी है कि सर्वप्रथम आचार्य भद्रबाहु ने अभिवादन में 'जयजिनेन्द्र' कहने की प्रेरणा दी थी।

जय जिनेन्द्र बोलिये

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये ।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिये ।
जय जिनेन्द्र ही हमारा एकमात्र मंत्र हो,
जय जिनेन्द्र बोलने से हर मनुज स्वतंत्र हो ।
जय जिनेन्द्र बोल बोल खुद जिनेन्द्र हो लिये ।।

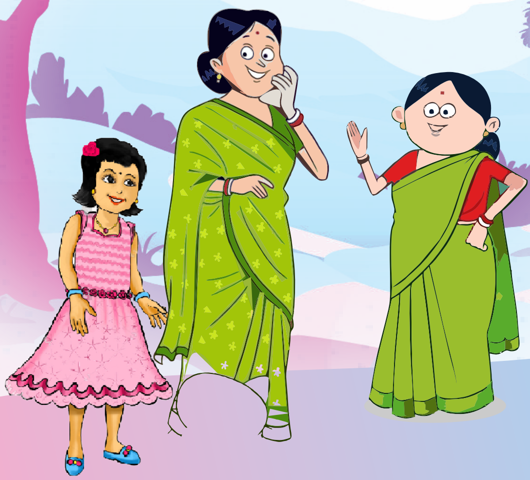

अब नहीं पहनाऊँगी

अरे संस्कृति! सुबह-सुबह कहाँ चली बेटी को लेकर....

जिनमंदिर जा रही हूँ प्रेरणा!

अरे वाह! जिनमंदिर जा रही हो यह तो बहुत अच्छी बात है पर.....

पर क्या प्रेरणा ....?

बुरा ना मानो तो एक बात कहूँ ....

हाँ हाँ कहो न... तुम भी कमाल करती हो, दोस्तों में बुरा मानने की बात ही नहीं..

तुम्हारी बेटी ने जो स्लीवलेस कपड़े पहने हैं वे हैं अच्छे नहीं हैं।

अरे प्रेरणा! तुम भी क्या पुरानी सोच की बात कर रही हो। आजकल तो इन कपड़ों का फैशन है..

ऐसा फैशन किस काम को जो हमारे संस्कृति को ही नष्ट करे..

तुम भी क्या संस्कृति और समाज की बात करने लगीं और अरे मेरी बेटी की उम्र ही क्या है मात्र 3 साल..

इसलिये तो कह रही हूँ कि जब तीन साल में हम इन कपड़ों को पहनने के संस्कार नहीं देंगे तो बड़े होने पर ये पता-पता नहीं क्या - क्या पहनेंगे..

अच्छा संस्कृति! मुझे एक बात बताओ कि तुम ये चाहती हो तुम्हारी यह बेटी बड़ी हो जाये तो लोग इसके कपड़े देखकर कमेन्ट्स करें.. या कोई इसके साथ कुछ ऐसा करने का प्रयास करे जो हम कभी नहीं चाहते या फिर ये स्वयं ऐसा करे जिससे हमें शर्मिंदा होना पड़े..

अरे प्रेरणा! कौन माँ ऐसा चाहेगी....

फिर हम ऐसे स्लीवलेस कपड़े पहनाकर उनकी सुरक्षा कर रहे हैं कि उन्हें संकट में डाल रहे हैं।

लेकिन प्रेरणा ! मेरी बेटी बहुत जिद्दी है उसे ऐसे कपड़े ही पसंद आते हैं तो मैं कर सकती हूँ..

बच्चों की जिद के लिये क्या हम उनके भविष्य से खिलवाड़ करें और कल बेटी चांद पर जाने की जिद करेगी तो चांद पर भी ले जाओगी। हम जैसे संस्कार देंगे बच्चे उसी संस्कार और परिवेश में पलते हैं। बच्चे हमसे ही सब सीखते हैं।

बात तो तुम्हारी सच है प्रेरणा..! पर बहुत कठिन है

कठिन और सरल मन का वहम है। आज समाज का माहौल इतना अच्छा नहीं है। रोज इतनी घटनायें बढ़ रहीं हैं और हम वही काम करके घटनाओं को आमंत्रण दें, ये कोई बुद्धिमानी नहीं है। हमें तो सीता, मनोवती और चन्दनबाला के संस्कारों का अनुकरण करना चाहिये, हम तो उस देश के निवासी जहाँ की वीर महिलाओं ने दूसरे पुरुष की बुरी नजरों से दुखी होकर प्राण तक त्याग दिये। यदि हम उतना नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं हम अपने बच्चों को अच्छे और बुरे में अन्तर करना सिखा सकें।

प्रेरणा! तुम्हारी बात बिल्कुल सही है और समझ में भी आ गई है। मैं तो चली।

पर कहाँ संस्कृति....!

घर वापस। बेटी के कपड़े बदलने और आज से प्रतिज्ञा करती हूँ कि आज के बाद ऐसे कपड़े न पहनाऊँगी और न ही खरीदूँगी और न ही किसी को गिफ्ट दूँगी।

वाह संस्कृति! ये हुई न बात।

शरीर और आत्मा का वार्तालाप

सुबह के 4 बजे

आत्मा – चलो ! आत्मा की साधना का समय हो गया है... उठो, उठो ना, उठो ना ..

शरीर – सोने दो न... ! अभी क्यो तंग कर रही हो, रात को बहुत देर से सोया था। थोड़ी देर बाद उठकर साधना करुँगा ।

आत्मा – ठीक है और थोड़ी देर बाद ही सही ।

सुबह 6 बजे

आत्मा – अब तो उठ जाओ भाई । सूरज भी अपनी किरणें फैलाता हुआ हमें जगा रहा है उठो ना ।

शरीर – कितना परेशान करती हो... ठीक है, उठ रहा हूँ, बस 5 मिनिट और...

थोड़ी देर बाद शरीर उठा और जिनमंदिर गया और 10 मिनिट बाद ही वापस आने लगा...

आत्मा बोली – अरे अरे... ! क्या हुआ ? इतनी जल्दी मंदिर से वापस जा रहे हो, अभी तो मुझे शांति मिलना शुरु हुई और तुम उठ गये...

शरीर – अरे...! मुझे घर का और ऑफिस का मितना काम है तुम्हारी समझ में तो कुछ नहीं आता और अभी नाश्ता भी करना है ।

आत्मा – ठीक है तो शाम को साधना तो करोगे ना..

शरीर – (परेशान होते हुये) हाँ भाई ! हाँ जरुर करुँगा । सारा दिन निकल गया । आत्मा दिन भर के काम राग-द्वेष के परिणामों से आकुलित हुई और शाम को शरीर से बोली – अरे ! शाम हो गई अब तो फ्री हो गये होगे । अब तो चलो साधना के लिये ..।

शरीर – (चिल्लाते हुये) क्यों सारा दिन तंग करती रहती हो... देखती नहीं अभी ऑफिस में दिन भर काम करके आया हूँ, बहुत थक गया हूँ।

आत्मा – अरे ! फिर तो बहुत अच्छी बात है, यदि तुम थके हुये हो तो एक बार आत्मा की साधना करोगे तो थकान तुरंत दूर हो जायेगी ।

शरीर – अभी नहीं ! अभी थोड़ी टीवी देख लूँ । रात को पक्का बैठूँगा..। रात को थकान से शरीर की आंखे बंद हो रही हैं मुश्किल से शरीर स्थिर होकर बैठा और नींद आने लगी । शरीर उठा और सोने के लिये जाने लगा तो आत्मा बोल उठी – अरे अरे ! क्या हुआ ? अभी-अभी तो बैठे थे, अचानक उठकर कहाँ जाने लगे ?

शरीर – मैं बहुत थक गया हूँ, कल सुबह 4 बजे आत्म साधना के यिले जरुर बैठूँगा...। आत्मा चुप हो गई तभी शरीर ने मोबाईल पर अपने एक मित्र का मैसेज देखा और सोचा –अरे वाह ! ये तो मेरे दोस्त का मैसेज है । थोड़ी देर चैटिंग कर लूँ फिर सो जाऊँगा और वह चैटिंग करने लगा ।

आत्मा – देखो ! चैटिंग के लिये नींद भाग गई है और साधना के नाम पर इसे नींद आ रही थी । और जिस आत्मा के कारण यह जीवन जी रहा है उसके नाम पर नींद आने लगती है । चलो कल देखते हैं ।

दूसरे दिन वहीं दिनचर्या और जीवन समाप्त ।

कथा सुनो पुराण की-

भारतीय इतिहास की श्रेष्ठ नारी :

मन्दोदरी

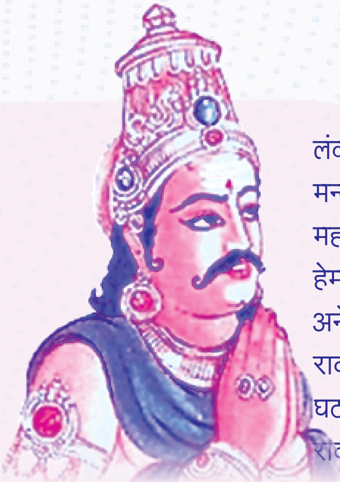

लंका नरेश रावण की धर्मपत्नी मन्दोदरी को सती नारियों में महत्वपूर्ण स्थान है। राजा मय और रानी हेमवती की सुपुत्री रानी मन्दोदरी बहुत विदुषी महिला थी और उन्हें अनेक शास्त्रों का गहरा अध्ययन था। पद्मपुराण के अनुसार मन्दोदरी रावण की परामर्शदात्री भी थी। अनेक अवसरों पर मन्दोदरी अनेक घटनाओं और उनके परिणामों का पूर्व से अनुमान कर लेती थी। रावण की 18000 रानियाँ थीं परन्तु अत्यन्त सुन्दर मन्दोदरी को उसके विशिष्ट गुणों के कारण उन्हें पटरानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य रविषेण ने मन्दोदरी को सरस्वती, लक्ष्मी और नारियों में सर्वोत्तम कहा है।

एक बार खरदूषण विद्याधर ने रावण की बहन चन्द्रनखा का अपहरण करके ले गया तो रावण ने अत्यंत क्रोध में खरदूषण पर आक्रमण करने को तैयार हो गया तब मन्दोदरी ने रावण को समझाया कि हे नाथ! कन्या तो पराया धन होती है। उसे पिता का घर त्यागना ही होता है। खरदूषण आपकी बहन को ले गया है, वह कई विद्याओं में पारंगत है। यदि वह युद्ध में हार जायेगा तो अपहरण के दोष से कोई भी दूसरा व्यक्ति चन्द्रनखा से विवाह नहीं करेगा और उसे विधवा के समान जीवन व्यतीत करना होगा।

जब रावण ने सीता का हरण किया तब भी मन्दोदरी ने रावण को बहुत समझाया। मन्दोदरी ने कहा - हे नाथ! सीता में ऐसा कौन सा गुण है जो मुझमें नहीं है ? मैं अपनी इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ हूँ। रावण के न मानने पर मंदोदरी ने स्पष्ट रूप से कहा - हे दशानन! लगता है कि राम और लक्ष्मण समीप आ गये हैं। जिस प्रकार अश्वग्रीव और तारक आदि राम के द्वारा मरण को प्राप्त हुये । क्या आप भी इस तरह से मरण को प्राप्त होना चाहते हैं ?

जब रावण नहीं माना तो मन्दोदरी ने शुक आदि मन्त्रियों को बुलाया और रावण को गंभीरता से समझाने के लिये कहा। परन्तु मन्त्रियों ने असमर्थता व्यक्त कर दी क्योंकि वे जानते थे कि रावण किसी की नहीं सुनेंगे। फिर भी रानी मन्दोदरी ने अंतिम क्षण तक रावण को समझाने का पूरा प्रयास किया। मन्दोदरी ने अपने पति की भक्ति की परन्तु उसके गलत

कामों का श्रेष्ठ पत्नी के रूप में उसका विरोध भी किया।

जब रावण की मृत्यु हो गई तो मन्दोदरी बहुत दुःखी हुई। तब राम ने मन्दोदरी आदि रानियों को समझाया मन्दोदरी ने शांत परिणामों से विचार किया और आर्यिका शशिकान्ताजी से धर्म श्रवण किया और अत्यंत वैराग्य भाव से चन्द्रनखा आदि 48000 नारियों के साथ आर्यिका दीक्षा ले ली।

मन्दोदरी ने आर्यिका के व्रत के साथ अपूर्व साधना की और जीवन के अन्त में समाधिमरण पूर्वक स्वर्ग में गमन किया।

भाग्य और पुरुषार्थ

एक सज्जन बहुत गरीब और दुखी थे। उनसे धर्म में मन लगाने की बात करते तो कह देते कि इस समय भाग्य साथ नहीं दे रहा, क्या करूँ ? कुछ दिनों में भाग्य ने पलटा खाया और वे लखपति बन गये।

एक दिन उनसे मिलन हो गया तो उनसे कहने लगे - पण्डितजी! मैंने बड़ी मेहनत से धन कमाया है।

मैंने पूछा - जब आप गरीब थे, तब तो भाग्य को दोष देते थे और आज पुरुषार्थ, मेहनत की बात कर रहे हो। या भाग्य को मानो या पुरुषार्थ को। ऐसा क्यों करते हो कि - मीठा मीठा गप - कड़वा कड़वा थू। कुछ वर्ष बाद वे फिर गरीब हो गये।

मैंने कहा - अब पुरुषार्थ कहाँ गया ? वे कहने लगे यह सब तो भाग्य के आधीन है।

मैंने समझाया - बाहर की सामग्री भाग्य से मिलती है। पुरुषार्थ अपने भावों में हो सकता है, दूसरी वस्तु में पुरुषार्थ नहीं चलता है।

कलचुरी नरेश और जैन धर्म

भारतवर्ष के इतिहास में कलचुरी नरेशों का काल अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सन् 550 से 1740 तक भारत के उत्तर और दक्षिण के किसी न प्रान्त पर शासन किया है। इनके अनेक वंशज शिव को मानने वाले थे परन्तु उन्होंने जैन धर्म का भी बहुत प्रचार-प्रसार किया। ब्र. शीतलप्रसाद जी के अनुसार **कलचुरी** शब्द जैनत्व का परिचायक है। कलचुरी नरेश दिगम्बर मुनि पद धारण करते थे और कर्मों की निर्जरा करने के लिये साधना करते थे। कल का अर्थ है शरीर और चूरि का अर्थ चूर-चूर करना अर्थात् शरीर के प्रति मोह परिणाम को चूर-चूर करना। कलचुरी वंश के प्रथम सम्राट कीर्तिवीर्य ने मुनि पद धारण कर आत्मसाधना की थी।

प्रोफेसर रामस्वामी एयंगार ने वेल्विकुडी के ताम्रपत्र और तमिल ग्रन्थ पेरियपुराणम् से यह सिद्ध किया है कि कलचुरी वंश के राजा जैन धर्म के पक्के अनुयायी थे। इनके तमिल प्रान्त में पहुँचने पर जैन धर्म की वहाँ बहुत उन्नति और प्रचार हुआ था। कलचुरी सम्राट साहु सर्वहार के पुत्र महाभोज ने मध्यप्रदेश के बहोरीबन्द में विशाल शांतिनाथ मंदिर बनवाया, इसके साथ ही त्रिपुरी में भगवान ऋषभनाथ की, हनुमानताल जबलपुर के जैन मंदिर में भगवान ऋषभनाथ की भव्य प्रतिमा, पटना और सोहागपुर में प्राप्त अनेक प्रतिमायें जैन धर्म के प्रभाव को सिद्ध करती हैं। ये सभी प्रतिमायें कलचुरी राजाओं ने स्थापित करवाईं।

सन् 1200 में कलचुरी राजमंत्री रेचम्य ने श्रवणबेलगोला में भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई। बाद में विज्जल राजा के समय में जैन धर्म का प्रभाव कम हो गया। शैव धर्म के प्रचार हेतु चमत्कारों का सहारा लिया गया। उस समय अबलूर जैन धर्म के प्रचार का प्रमुख केन्द्र था। उस समय के राजा रामय्य ने जैनियों को बहुत सताया और अनेक जैन प्रतिमाओं को तोड़ दिया। सोमनाथ मंदिर में जैनियों पर अत्याचार के चित्र उत्कीर्ण हैं।

विज्जल का मंत्री वसव जैन धर्म अनुयायी था। उसने अपने पद का प्रयोग कर जैन धर्म के उत्थान के लिये बहुत धन दिया। तब विज्जल राजा इससे नाराज हो गया तो वसव को राजा के नाराज होने की जानकारी मिली तो वह राज्य से भाग गया तो विज्जल ने वसव के सहयोगी हल्लेइज और मधुवेय्य की आंखें निकलवा लीं। बाद में वसव में जगदेव नाम के व्यक्ति को भेजकर विज्जल राजा की हत्या करवा दी।

गयकर्ण राजा के समय में भगवान शांतिनाथ के स्तम्भ निर्माण का उल्लेख है। इन सब अनेक कारणों से कलचुरी नरेशों का जैन धर्म के प्रचार में बहुत योगदान रहा।

भारतीय संस्कृति के विश्वदूत -
श्री वीरचन्द राघवजी गांधी

जैन समाज में समय-समय पर अनेक सन्त, विचारक, विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार, वैज्ञानिक, दानवीर, शासक आदि होते रहे हैं जिन्होंने विश्व को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया।

ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व थे - वीरचन्द राघवजी गांधी। 25 अगस्त 1864 में भावनगर के महुवा में जन्मे वीरचन्द बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। उनके पिता को पुत्र के जन्म के पूर्व एक स्वप्न आया कि घर के आंगन में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा गड़ी हुई है। स्वप्न सच हुआ और वीरचन्दजी के जन्म के दिन ही भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा आंगन खोदकर निकाली गई। वीरचन्दजी ने कानून की शिक्षा के साथ जैन दर्शन का गहरा अध्ययन किया और 14 भाषायें सीखीं।

सितम्बर 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद का आयोजन हुआ जिसमें दुनिया के अनेक धर्मों के 3000 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की थी। उसी धर्म संसद में स्वामी विवेकानन्द को उनके प्रभावशाली भाषण ने सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध कर दिया था। इसी धर्म संसद में वीरचन्दजी का भी जैन दर्शन और उसकी प्रभावी जीवन शैली विषय पर प्रभावशाली भाषण हुआ था। उस समय के वहाँ के अखबारों में वीरचन्दजी की प्रशंसा और उनके व्याख्यान के अंश भी प्रकाशित हुये थे। इस व्याख्यान से वे इतने प्रसिद्ध हो गये कि उन्हें और व्याख्यान देने के लिये अमेरिका में ही रुकने का निवेदन किया गया। वीरचन्दजी ने अमेरिका में प्राच्य विद्या और जैन विद्या नाम की दो संस्थायें स्थापित कीं। अमेरिका के अलावा उन्होंने यूरोपीय देशों में कुल 535 व्याख्यान दिये। उनके व्याख्यानों से प्रभावित होकर अनेक विदेशियों ने पूर्णतः शाकाहारी जीवन अपना लिया। शिकागो में आज भी वीरचन्दजी प्रतिमा लगी हुई है।

1896 में जब भारत में अकाल पड़ा तो वीरचन्दजी ने अमेरिका से चालीस हजार रुपये और एक जहाज भरकर अनाज भिजवाया। वीरचन्दजी जीव दया के प्रति बहुत जागरुक थे। जब उन्हें पता चला कि

सम्मेदशिखरजी में सुअर मारने के लिये कत्लखाना खोला जा रहा है तो उन्होंने अपने कानून के ज्ञान का उपयोग कर कत्लखाने की योजना बन्द करवा दी। जैन तीर्थ पालीताना में पहले जैन तीर्थ यात्रियों से टेक्स लिया जाता था। वीरचन्दजी ने बहुत संघर्ष कर उस टेक्स (Tax) को बन्द करवा दिया। 1890 में जब वीरचन्दजी के पिता का देहांत हुआ तो परिवार के लोग छाती पीटकर रोने लगे। उस समय यही परम्परा थी। वीरचन्दजी ने इस परम्परा को बन्द करवाया और शांति से देह संस्कार करने को कहा।

महात्मा गांधी वीरचन्दजी को अपने भाई जैसा मानते थे। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में वीरचन्दजी का उल्लेख बहुत गौरव के साथ किया है। वीरचन्दजी विवेकानन्दजी के भी परम मित्र थे। जब वे दोनों अमेरिका में थे तो विवेकानन्दजी ने जूनागढ़ के दीवान हरिदासजी को लिखे एक पत्र में लिखा - यहाँ आपके परिचित वीरचन्द गांधी हैं। ये इस भयंकर ठण्ड में भी फल-सब्जी के अतिरिक्त कुछ नहीं खाते। इनका रोम-रोम भारत की आजादी के लिये समर्पित है। अमेरिका की जनता इन्हें बहुत पंसद करती है। गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुये श्री नरेन्द्र मोदी ने एक बार वीरचन्दजी को याद करते हुये कहा था कि वीरचन्दजी बहुत बड़े विद्वान थे परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि 7 अगस्त 1901 में मात्र 37 वर्ष की आयु में वीरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया था। भारत सरकार ने श्री वीरचन्दजी के सम्मान में 8 नवम्बर 2009 को पाँच रुपये मूल्य का डाक टिकिट जारी किया था।

देश और जैन समाज के ऐसे महान सपूत को सादर नमन।

चहकती चेतना का केलेण्डर निःशुल्क प्राप्त करें

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी चहकती चेतना का केलेण्डर हो रहा है। आपको ज्ञात हो कि यह केलेण्डर अप्रेल 2025 से मार्च 2026 तक की तिथियों वाला सचित्र रंगीन होगा। इस केलेण्डर में एक विशेष थीम के साथ रोचक और ज्ञानवर्द्धक जानकारी प्रकाशित की जाती है। साथ ही इसमें तीर्थंकरों के कल्याणक, विशेष धार्मिक पर्व, देश में होने वाले विशेष आयोजनों की जानकारी भी दी जाती है।

कलेण्डर प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी 9752756445 नंबर पर अपना पूरा पता व्हाट्सएप करें। कलेण्डर मात्र पोस्टेज शुल्क पर भेजा जायेगा।

प्रेरक प्रसंग

गर्व किस पर

एक सम्राट मुनिराज के पास उपदेश सुनने पहुँचे। सम्राट ने बड़े गर्व से अपना परिचय दिया।

मुनिराज ने पूछा - तुम रेगिस्तान में भटक जाओ और प्यास से दम घुटने लगे और उस वक्त कोई गन्दे नाले का लोटा भर पानी लाकर तुमसे कहे - इस लोटे भर पानी का मूल्य आधा राज्य है तो तुम क्या करोगे ?

सम्राट ने कहा - मैं तुरन्त वही पानी ले लूँगा।

फिर मुनिराज ने कहा - यदि वह सड़ा पानी पेट में जाकर रोग उत्पन्न कर दे और तुम मरने लगो और उस समय एक वैद्य (डॉक्टर) पहुँचकर तुमसे कहे कि अपना बाकी बचा हुआ आधा राज्य दे दो तो मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा। तब तुम क्या करोगे ?

राजा बोला - उसे आधा राज्य देकर अपने प्राणों की रक्षा करूँगा। जीवन ही नहीं तो राज्य किस काम का ?

तब मुनिराज ने कहा - जिस राज्य की कीमत एक लोटा सड़ा पानी और उससे उत्पन्न रोग से ठीक होने के की दवा है - ऐसा राज्य किस काम का और उस पर घमंड क्या करना ?

विशाल ह्रदय

पाण्डवों को वनवास देकर कौरव भाई बहुत खुश थे। वे सब खुशियाँ मनाने एक गन्धर्व विद्याधर के बाग पहुँच गये। गन्धर्व देवों ने सोचा कि इनकी खुशियों के उत्सव से पूरा बाग खराब हो जायेगा। उन्होनें कौरवों से उनके बाग में उत्सव मनाने से मना किया परन्तु कौरव नहीं माने। तब कौरवों को पकड़ने के लिये गन्धर्व आगे बढ़े तो सारे कौरव डरकर भाग गये पर उन्होंने दुर्योधन को पकड़ लिया। जब यह समाचार युधिष्ठिर को मिला तो उन्होंने कहा - हम घर में 100 कौरव और पाण्डव पाँच हैं परन्तु दूसरों के लिये 105 हैं। उन्होंने अर्जुन को भेजकर दुर्योधन को छुड़वा लिया।

संदेश - परिवार के मतभेद सामाजिक जीवन में कमजोरी नहीं बनना चाहिये ।

समाचार

पिड़ावा में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न

राजस्थान के झालावाड़ जिले के पिड़ावा में नवनिर्मित मोक्षायतन संकुल का श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। 13 नवम्बर से 17 नवम्बर 2024 तक आयोजित इस कार्यक्रम में देश के अनेक विद्वान और साधर्मीजन पधारे। सम्पूर्ण महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर थे। महोत्सव में मुम्बई निवासी श्री धनेशजी - दीपाजी शाह ने सौधर्म - शची इन्द्राणी का और जामनगर निवासी श्री सुनीलजी - श्रीमति सोनलजी पुनातर ने माता-पिता के दायित्व का निर्वहन किया।

ज्ञातव्य है कि यहाँ पण्डित नगेशजी के अथक श्रम और पवित्र भावना स्वरूप मोक्षायतन नाम का भव्य संकुल बनकर तैयार हुआ है।

चिदायतन - भगवान शांतिनाथ के चार कल्याणकों की पावन भूमि हस्तिनापुर में नवनिर्मित चिदायतन संकुल का **श्री शांतिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 1 से 6 दिसम्बर 2024 तक** संपन्न हुआ। मंगलायतन के स्वप्नदृष्टा श्री पवनजी की प्रेरणा स्वरूप चिदायतन संकुल का निर्माण संपन्न हुआ है। महोत्सव में अलीगढ़ के श्री स्वप्निलजी श्रीमति प्रियाजी ने सौधर्म - शची इन्द्राणी का और जबलपुर निवासी श्री संजयजी - श्रीमति मंजूजी ने माता-पिता के दायित्व का निर्वहन किया। इस महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनंदनकुमारजी खनियांधाना थे।

गुरसराय - झांसी के निकट स्थित गुरसराय नगर में नवनिर्मित भव्य जिनमंदिर का श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 10 से 15 दिसम्बर 2024 तक संपन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि यहाँ 10 वर्षों की अथक मेहनत और समर्पण से अतिभव्य जिनमंदिर बनकर तैयार हुआ है।

महोत्सव में जबलपुर निवासी श्री अनुभवजी- श्रीमति पूजाजी ने सौधर्म - शची इन्द्राणी का और भोपाल निवासी श्री पवनजी - श्रीमति मधुकांताजी ने माता-पिता के दायित्व का निर्वहन किया। इस महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर थे।

सोनगढ़ के कहान शिशु विहार में एलुमिनी समारोह

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा सोनगढ़ में संचालित कहान शिशु विहार के भूतपूर्व विद्यार्थी का पुनर्मिलन समारोह दिनांक 21 और 22 दिसम्बर को संपन्न हुआ। इस अवसर से विद्यालय से पढ़े हुये 65 बच्चों ने अपने अध्ययनकाल की यादें ताजा कीं। इस अवसर सभी बच्चों को सन्मानित किया गया। कार्यक्रम में ट्रस्ट परिवार से श्री अक्षय भाई दोशी, श्री हितेन सेठ, श्रीमति दीपा सेठ, श्रीमति शीतल-विजेन शाह लंदन उपस्थित थे।

मायाचार का दुष्परिणाम

दुर्ग पर्वत पर चारण ऋद्धिधारी गुणनिधि नाम के मुनिराज चार दिन के उपवास का नियम लेकर जंगल में आत्मसाधना कर रहे थे। पूरे नगर में मुनिराज की आत्मसाधना की चर्चा हो रही थी। सभी उनके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे। चातुर्मास के बाद मुनिराज आकाश मार्ग से विहार कर गये। उसी पर्वत के पास आलोक नगर में मृदुमति नाम के दूसरे मुनिराज आहार के लिये तो तो लोगों ने समझा कि यही गुणनिधि मुनिराज मुनिराज हैं और उनकी अपूर्व आत्मसाधना के लिये उनकी विशेष पूजा और भक्ति की और विशेष भक्तिपूर्वक उन्हें आहार दिया। मुनि मृदुमति को यह मालूम था कि यह मुझे गुणनिधि मुनि समझकर मेरी इतनी भक्ति कर रहे हैं परन्तु सम्मान पाकर बहुत खुश हुये और उन्होंने यह नहीं कहा कि वे गुणनिधि मुनि नहीं हैं। बाद में भी उन्होंने इस अपराध के लिये अपने गुरू से कोई प्रायश्चित नहीं लिया, उनमें मायाचार का परिणाम आ गया। आयु के अंत में पूर्व में आयु बंधने के कारण मृदुमति स्वर्ग में देव बन गये और स्वर्ग की आयु समाप्त कर वे मायाचारी के परिणाम से शल्लकी वन में हाथी बन गये। इस हाथी को रावण ने पकड़कर अपनी सेना में रख लिया और इसका नाम त्रिलोकमण्डन रखा।

बाद में जब राम ने रावण को पराजित किया तब युद्ध के बाद त्रिलोकमण्डन हाथी को अयोध्या ले आये। एक दिन अचानक पूर्व भव के गुणनिधि के जीव त्रिलोकमण्डन को बहुत क्रोध आ गया और वह पूरे नगर में उत्पात करने लगा, उसने कई पेड़ उखाड़कर फेंक दिये, लोग डरकर जान बचाने के लिये यहाँ-वहाँ भागने लगे। अचानक भरत को सामने देखकर त्रिलोकमण्डन हाथी शांत हो गया। भरत ने उसे सम्बोधित किया उस हाथी को जातिस्मरण हो गया। उसे अपने पूर्व भव का मायाचारी का अपराध याद आ गया। उसे आत्मज्ञान हो गया और उसने हिंसा का त्याग कर दिया। अब वह सूखे पत्ते खाने लगा और अत्यंत शांत भाव से समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया और स्वर्ग में पुनः देव हुआ।

करनी का फल

महाराज जयसिंह जंगल में प्यास से तड़पने लगे, प्यास से उनका गला सूखा जा रहा था। कुछ चले ही थे कि कुछ दूर पर एक झोपड़ी दिखाई दी। झोपड़ी के सामने पहुँचकर उस गरीब किसान से राजा ने पानी मांगा। किसान ने राजा को घड़े का ठण्डा पानी पिलाया और दूध और चावल की माठी खीर खिलाई।

राजा को आज का भोजन बहुत स्वादिष्ट लगा। राजा ने एक कागज में कुछ लिखकर किसान को देते हुये कहा - जब कभी तुम्हारे जीवन पर कुछ संकट पड़े तो मेरे पास आना। मैं जयपुर में रहता हूँ। इतना कहकर राजा चला गया। किसान ने वह कागज अपनी पत्नी को दे दिया।

कुछ दिन बाद गांव में अकाल पड़ा। अनाज के बिना लोग एक-एक दाने को तरसने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। ऐसे कठिन समय में किसान की पत्नी को राजा के वचन की याद आई।

वह कागज लेकर किसान जयपुर पहुँच गया और राजभवन के कर्मचारी को कागज दिखाकर राजा के महल में भी पहुँच गया। राजा उस समय भगवान के सामने पूजा कर रहा था। बहुत देर तक राजा की क्रिया देखकर किसान कहने लगा - राजन्! आप बार-बार हाथ फैलाते हैं, फिर जमीन पर हाथ पटकते हैं, इस बीमारी का कुछ इलाज कराइये।

राजा ने समझाया - भाई! यह बीमारी नहीं, मैं भगवान से प्रार्थना कर रहा था।

किसलिये ? - किसान ने पूछा।

सुख साधन मांगने के लिये। - राजा ने कहा।

आप भी भिखारी हैं, हम तो आपको राजा समझ रहे थे। आप तो भगवान से मांग रहे हैं। जब आप भगवान से मांग रहे हैं तो भगवान से मैं भी मांग लूँगा। आपसे क्यों मांगे ?

भाई! भगवान ही सबको देता है।

मैं मांगूँगा तो क्या मुझे भी दे देगा ? - किसान ने पूछा।

हाँ भाई ! किस्मत में होगा तो जरूर देगा।

राजन ! किस्मत देती है या भगवान ?

इन प्रश्नों को सुनकर राजा का परेशान हो गया।

इस प्रसंग से यह पता चलता है कि सबको अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है। यदि भगवान देता तो सबको देता। सच बात तो यह कि कोई किसी को कुछ नहीं दे सकता, सब अपनी-अपनी करनी का ही फल पाते हैं।

शांत बंदर

शांत आज क्यों बैठे बंदर ।
नटखट थे शैतान तुम बंदर ।।
बिल्ली मौसी पूछे उससे,
कारण तो बतला दो ।
इतने चंचल थे भैया तुम,
हुये शांत क्यों समझा दो ।।
बंदर बोला उछलकूद में,
समय गया यह सारा ।
श्री जिनवर ने आज बताया,
आतम सबसे प्यारा ।।

पर्वत और पहाड़

कितने अच्छे सुंदर लगते, पर्वत और पहाड़ ।
ऊँचे-नीचे छोटे-मोटे, सुंदर लगते झाड़ ।।
पर्वत और पहाड़ों की है, दुनिया अजब निराली ।
जहाँ बिछी रहती है हरदम, हरियाली हरियाली ।।
ये सारे इक इन्द्रिय जीव हैं, जिनवाणी में आया ।
आत्मा की विराधना करने, का फल इनने पाया ।।
सम्यग्दर्शन पाकर हमको, जिनवाणी उर धरना ।
प्रभु आज्ञा का पालन करके, खोटी गति से बचना ।।

रचनाकार - विराग शास्त्री

जन्मदिन की मंगल शुभकामनायें

जन्म मरण के अभाव की भावना में ही जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

पर की आशा छोड़कर, कर आगम विश्वास।
जन्म मरण का अंत हो, हो मुक्ति का वास।।

आगम विनीत जैन शिवपुरी (म.प्र.) 30 जनवरी

स्वानंदी ही कार्य है, मनुज की पहचान।
निज में निज की स्वस्ति हो, बनना तुम भगवान।।

स्वानंदी हेमंत बेलोकर, डासाला (म.प्र.) 9 फरवरी

अव्यान पुण्य उदय जगा, पाया मंगल धर्म।
यही कामना जन्म दिवस पर, पाना शिवपुर शर्म।।

अव्यान जैन 18 मार्च

रिदम जिनधर्म मिला, करना आतम का काज।
जन्म दिवस पर यही कामना, पाना शिवपुर राज।।

- रिदम राहुल सेठी, सूरत (गुज.) 18 मार्च

धैर्यवान बनना सिया, हो नारी आदर्श।
सीता मैना सा साहस धरो, पाओ शिवपुर दर्श।।

सिया अजिंक्य पाटिल, पुणे (महा.) 2 अप्रेल

जन्मदिन शुभकामनाएं प्रकाशित करने के लिए बच्चे की फोटो, पूरा पता, जन्म तिथि 9752756445 नंबर पर व्हाट्सएप करें

"संस्कारित जीवन ही सुखी जीवन की आधारशिला है।"

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट,
विले पारले,मुम्बई द्वारा
पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी
की अध्यात्म साधना भूमि
तीर्थधाम सुवर्णपुरी सोनगढ़
में संचालित

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन
विद्यार्थी गृह
(कहान शिशु विहार)

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि
15 मार्च 2025

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें

- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के मूलभूत दृढ़ संस्कार।
- कक्षा छटवीं से दसवीं तक अध्ययन सुविधा।
- गुजरात के श्रेष्ठतम विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्ययन।
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल।
- शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान।
- योगा क्लास
- इंग्लिश क्लास
- कम्प्यूटर क्लास
- म्यूजिक क्लास
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन।
- प्रतिवर्ष शैक्षणिक तीर्थ यात्राओं का आयोजन।
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें।
- छठवीं कक्षा में प्रवेश।
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्तित्व विकास।

सभी सुविधायें पूर्णतः निःशुल्क।

कहान शिशु विहार

राजकोट रोड, सोनगढ़, जि.भावनगर, सौराष्ट्र गुजरात
निदेशक – विराग शास्त्री (जबलपुर): 9300642434,
विद्यालय प्रभारी – आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519 , अधीक्षक – प्रियम शास्त्री : 9887986898

vishrantigruh123@gmail.com
kahan_shishu_vihar
kahan shishu vihar songadh

आप प्रवेश फार्म हमारी वेबसाइट :
www.kahanshishuvihar.org
से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

अवश्य पधारिए.. अवश्य पधारिए...

मंगल आयोजन

मध्यप्रदेश की संस्कारधानी नगरी जबलपुर (म.प्र.) में

धर्मायतन एवं ज्ञानायतन दो जिनमंदिरों का एक साथ भव्य

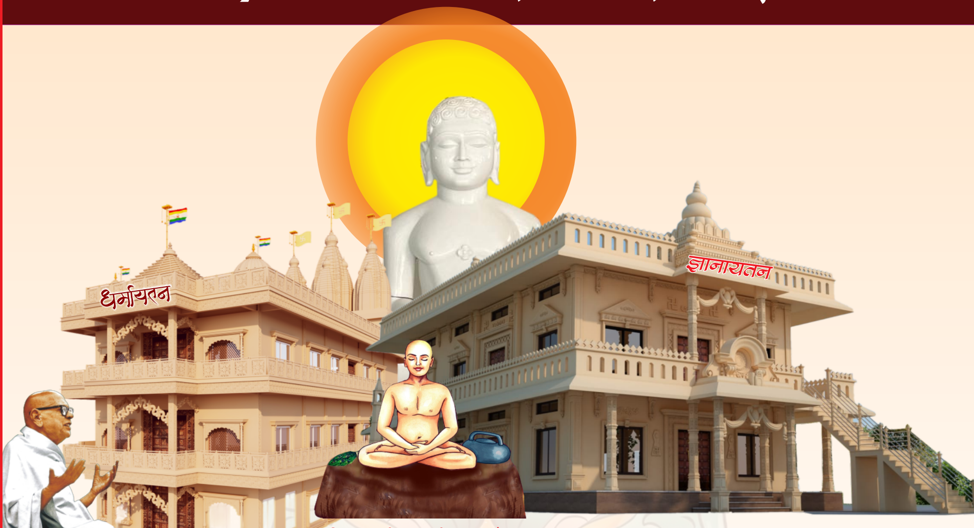

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्ददेव

श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनबिम्ब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

जबलपुर (म.प्र.)

रविवार, 2 फरवरी से शुक्रवार, 7 फरवरी 2025

आयोजक – आचार्य कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन वीतराग विज्ञान मंडल, जबलपुर

संपर्क : 9826240504, 9827078765